National Conference on Sustainable Developments in Engineering, Science, Humanities and Management (NCSDESHM – 2025)
28th December, 2025, Raipur, Chhattisgarh, India.

CERTIFICATE NO: NCSDESHM /2025/ C1225905

# बिहार में ग्रामीण विकास की संकल्पना और असमानताओ का भौगोलिक अध्ययन

**Dr. Lakshmi Kumari**

Assistant Professor, Department of Arts of Social Science,
S.B.A.N. College, Darheta-Lari, Arwal, Bihar.

## सारांश

बिहार में ग्रामीण विकास की संकल्पना और असमानता राज्य की सामाजिक-आर्थिक संरचना को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण विकास की संकल्पना का अर्थ केवल कृषि उत्पादन में वृद्धि नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत संरचना, रोजगार के अवसर, आवास, पेयजल, स्वच्छता तथा जीवन स्तर में समग्र सुधार से है। भौगोलिक दृष्टि से बिहार विविध प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों वाला राज्य है, परंतु इन संसाधनों का वितरण समान नहीं है। गंगा के मैदानी क्षेत्रों में उपजाऊ मिट्टी और सिंचाई की बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जबकि दक्षिणी पठारी और सीमावर्ती क्षेत्रों में भौगोलिक सीमाएँ विकास को प्रभावित करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, स्वास्थ्य सेवाएँ और शिक्षा संस्थानों की उपलब्धता में स्पष्ट क्षेत्रीय असमानताएँ दिखाई देती हैं। बाढ़-प्रभावित उत्तरी बिहार और सूखा-प्रवण दक्षिणी बिहार के विकास स्तरों में भी उल्लेखनीय अंतर पाया जाता है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या दबाव, गरीबी, बेरोजगारी, भूमिहीनता तथा सामाजिक संरचना जैसी मानव कारक भी असमानताओं को गहरा करते हैं। भौगोलिक अध्ययन के माध्यम से इन क्षेत्रीय विषमताओं की पहचान कर योजनाबद्ध विकास की दिशा तय की जा सकती है। इस प्रकार, बिहार में संतुलित ग्रामीण विकास के लिए स्थानिक विश्लेषण एवं क्षेत्र-विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना अनिवार्य है।